17	त्तेमंकरो रिष्टतातिः शिवतातिः शिवंकरः ॥ १८६ ॥ निविध	66
18	श्रद्धालुशास्तिकः श्राद्धीक विक हुनानिक	
19	नास्तिकस्तिद्विपयि। जन्न हुन्तिनिह	2
20	वैरिङ्गि विरागार्दी कार्यान	8
21	। । । । वीतदम्भस्वकत्कनः ॥ ४६० ॥ । ।	
22	प्रणाच्चा उसंमता जा कामना व इंगर्ह	
23	अन्वेष्टानुप- नम्ब्री हात्वर क्लिस क्लिस क्लिस	9
24	॥ इन्हा । जन्म व्यथ सक्ः तमः।	Z.
25	शक्तः प्रभूषु-	8
26	र्भुतार्तस्वाविष्टः हिनाए हाए	9
27	म ००% म अनुना शिथिलः स्रथः ॥, ४११ माणाणी	01
28	संवाक्को ४ झर्मर्टः स्या-	11
29	हिष्ट्रवीतस्तु निष्कलः।	12
30	म्रासीन उपविष्टः स्या-	13
31	॥ उन्हें ॥ इर्घ ऊर्घदमः स्थितः ॥ ४६२ ॥	41
. 32	म्रधनीना अधिगा अधन्यः पान्यः पियकदेशिका निर्मा	23
33	प्रवासी । कामानिकारिकार	16
34	तहणो हारिः	
17. Glück bereitend (4 W.). — 18. Gläubig (3 W.). — 19. Ungläubig. — 20. Frei von jeglicher Leidenschaft (2 W.). — 21. Frei		
von Hochmuth (2 W.) 22. Verächtlich (2 W.) 23. Der da		
sucht (2 W.) 24. 25. Im Stande seiend (4 W) 26. Von bösen		
Geistern besessen (2 W.). — 27. Schlaff, ohne Energie (2 W.). — 28. Der sich mit Gliederreiben beschäftigt (2 W.). — 29. Zeugungs-		
unfähig (2 W.) 30. Sitzend (2 W.) 31. Aufrecht stehend		
(3 W.). — 32. 33. Reisender (7 W.). — 34. Gesellschaft von Reisenden.		